गौरा देवी

सुनीता ठाकुर

"...जंगल बचेगा तो हम रहेंगे, हम सब एक होंगे तो जंगल बचेगा, जंगल हमारा रोजगार है... मायका है... जिन्दगी है..."

—गौरा देवी
(1925-91)

'चिपको आन्दोलन' पर कोई भी चर्चा श्रीमती गौरा देवी का नाम आये बिना पूरी नहीं कही जा सकती। गांव की इस कर्मठ व अनपढ़ महिला ने अपने जंगलों की रक्षा के लिए गांव-गांव की महिलाओं को एकजुट किया। सम्पूर्ण विश्व में महिला आन्दोलनकारियों में इस देवी का नाम सदा आदर के साथ लिया जाएगा।

बाल विवाह और मुसीबतें

गौरादेवी का जन्म 1925 में चमोली जिले की नीति घाटी में लाता गांव के 'मार्च्छा' परिवार में हुआ था। गौरा देवी का एक अन्य नाम नन्दा देवी था। स्कूल की व्यवस्था न होने के कारण गौरा देवी आगे न पढ़ सकी, लेकिन उन्होंने ऊनी व्यवसाय सीखा था। जैसे ही गौरा देवी १२ साल की हुई मां को विवाह की चिन्ता हुई। लड़की को बड़ी होते देख मां बोली 'लड़की बारह साल की हो गई है। अभी तक इसकी शादी नहीं हुई।" पिता ने मां को समझाया—"तू फिक्र मत कर। मैं लड़का ढूंढता हूं। पास के ही रैवी गांव के नैन सिंह व हीरा देवी के बेटे मेहरबान सिंह से गौरा देवी का विवाह हो गया। ससुराल में पशु पालन ऊनी कारोबार व छोटी सी खेती थी। 19 वर्ष की आयु में गौरा देवी का एक बेटा हुआ। घर में खूब खुशियां मनाई गईं। गौरा देवी 22 वर्ष की थी तो उनके पति की मृत्यु हो गई। उनका बेटा चन्द्रसिंह उस समय केवल ढाई वर्ष का था।

विधवा को समाज में अनेक संकट व यातनाओं से गुजरना पड़ता है। गौरा देवी ने भी बहुत संकट झेले, पर वह अडिग रही और स्वयं खेतों में काम किया। पड़ोसियों से ऊन उधार मांगकर ऊनी कारोबार चलाया। बेटे को पाल-पोसकर बड़ा किया और अपने पैरों पर खड़ा होने लायक

बना दिया। बड़ा होकर बेटे ने मां का काम संभाल लिया।

गौरा देवी ने अपना जीवन समाज के कार्यों में लगाना शुरू किया। वह कभी भी पंचायत के कार्य में पीछे नहीं रही। गांव के अन्य सामूहिक कार्यों में भी बढ़-चढ़कर भाग लेती थी। समाज सेवा की प्रेरणा उन्हें आस-पास की गरीबी से जूझती बहनों व स्वयं की त्रासदी की मार से मिली। कर्म में उनका अटूट विश्वास था।

चिपको आंदोलन

1993 में चिपको आन्दोलन के दौरान रैगी की महिलाओं ने भी अपने गांव में महिला मंगल दल बनाने की सोची। सबकी सहमति से गौरा देवी महिला मंगल दल की अध्यक्ष बनीं। इस दल ने

ग्राम की सफाई से लेकर जंगल की रक्षा तक की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली।

1973 में 'चिपको आन्दोलन' जोर पकड़ने लगा। मंडल व फाटा के अतिरिक्त रैगी में भी इसका प्रभाव पड़ा। समाज के कार्यों में जुटी गौरा देवी ने गांव की महिलाओं का एकत्र किया और कहा 'जंगल हमारे देवता हैं, हम इन्हीं के बलबूते पर जीवित हैं। जंगल न रहे तो भूस्खलन (धरती का खिसकना) होगा, बाढ़ आएगी। इसलिए हमें जंगलों की रक्षा करनी है। उन्हें किसी भी कीमत पर कटने नहीं देना। गौरा देवी गांवों में घूम-घूमकर 'जंगल बचाओ' के बारे में गांव वालों को समझाती रही।

1974 में सरकार ने ठेकेदारों को 'रैगी' के जंगल काटने का ठेका दे दिया। लोगों ने जंगल कटने के विरुद्ध प्रदर्शन किए, नारे लगाए 25 मार्च 1974 को गांव के सभी पुरुष रैगी से बाहर गए हुए थे। ठीक यही दिन जंगल काटने के लिए निश्चित हुआ था। 26 मार्च गाय-भैंस चरा रही एक लड़की ने दिन में बारह बजे यह हलचल देखी और दौड़ी-दौड़ी गौरा देवी के पास गई और कुल्हाड़ी लिए जंगल की ओर जा रहे लोगों की खबर दी। गौरा देवी ने 27 महिलाओं को इकट्ठा किया और बोली "आज हमारी परीक्षा का दिन है और सभी स्त्रियां जंगल की ओर चल पड़ीं। वे गंभीर थी। एक अनजाना भय और आत्म-विश्वास दोनों साथ-साथ थे।

जंगल में पहुंचकर गौरा देवी ने नरमी से मजदूरों को लौट जाने के लिए कहा। वन-विभाग के लोगों ने विरोध किया। शराब पीये हुए कुछ लोगों ने महिलाओं के साथ गलत व्यवहार किया

वन विभाग के कर्मचारी ने मजदूरों को पेड़ काटने का आदेश दिया। अब स्त्रियां गुस्से में आ गईं। उनकी एकता और क्रोध देखकर मजदूरों में भगदड़ मच गई। महिलाओं ने आपस में मंत्रणा की और सीमेंट का जो पुल जंगल तक आता था-उसे तोड़ दिया। गौरा देवी के साथ महिलाओं ने जो कर दिखाया उससे दूसरे गांवों की महिलाओं ने भी प्रेरणा ली ओर अपने वनों की रक्षा की।

गौरा देवी 'चिपको' और इसमें महिलाओं की भागीदारी की प्रतीक बन गई। उन्होंने महिलाओं को संदेश दिया कि वे अकेली या दुर्बल नहीं हैं। अगर उनमें आत्मविश्वास और लगन है तो वे अपनी समस्याएं खुद सुलझा सकती है।

अन्य सामाजिक कार्य

गौरा देवी केवल रैगी तक ही सीमित न रहीं। बद्रीनाथ के ऐतिहासिक मंदिर को बिड़ला द्वारा 1974 में नुक्सान पहुंचाया जाने लगा तो महिलाओं को साथ लेकर 'बद्रीनाथ मंदिर बचाओ' अभियान चलाया। इस प्रकार जंगल संरक्षण के लिए गांवों में हर स्त्री-पुरुष, बच्चों को जागरूक करती हुई गौरा देवी जीवन के आखिरी दिनों में गुर्दे और पेशाब की बीमारी से घिरी रहीं। 4 जुलाई, 1991 में गौरा देवी का निधन हो गया।

गौरा देवी आज इस संसार में नहीं हैं, लेकिन वह रैगी की हर महिला के अंदर जिन्दा है। उन्हीं की कोशिश से 'चिपको आन्दोलन' गांव-गांव में और संसार-भर में फैला। 'वनों की रक्षा, देश की रक्षा', 'वन सूंघो भाग जाओ', 'हिमपुत्री' की ललकार, वननीति बदले सरकार', आदि नारों की घोषणा करते हुए उन्होंने दिखा दिया कि एकजुट होकर महिलाएं कुछ भी कर सकती हैं। □

संपादित लेख–(उत्तराखण्ड की सबलाएं)

ओ हिम्मत वाली बहना हमें तो संगठन से मिला दे री...
ना चईयें तेरे बाग बगीचे ना चइयें
ना चईयें तेरा माली हमें तो मालिन से मिला दे री।

ओ हिम्मत ...
ना चईयें तेरे ताल तलईया ना चई...
ना चईयें तेरा धोबी हमें धोबिन से मिला दे री।

ओ हिम्मत...
ना चईयें तेरे कुनबे कुबटिया ना चई...
ना चईयें तेरे मिस्तरी हमें बहनों से मिला देरी।

ओ हिम्मत...